



सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥

सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ

॥2॥





असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥

मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥

जह महा भइआन दूत जम दलै ॥

तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥

जह मुसकल होवै अति भारी ॥


हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥


अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥

हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥


गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥

नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥






सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥
हरि का नामु जपत निसतरै ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥







छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै
॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥






जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
जहा पंथि तेरा को न सिजानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥
तह नानक हरि हरि अम्रितु बरखै ॥४॥





भगत जना की बरतनि नामु ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
हरि का नामु दास की ओट ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥





हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥

हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥

हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥

हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥

हरि का नामु जन की वडिआई ॥


हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥


हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥

हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥


जनु राता हरि नाम की सेवा ॥


नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥





हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
सुन समाधि नाम रस माते ॥
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥





पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते उत्तम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

